समकालीन हिंदी कहानियों में सांप्रदायिकता और मानवीय संवेदना का द्वंद्व: एक अध्ययन

पुष्पेंद्र कुमार गुप्ता[1], प्रो. (डॉ.) पूजा जोरासिया[2]
[1] शोधार्थी, कला एवं मानविकी संकाय, कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय, कोटा
[2] शोध पर्यवेक्षक, कला एवं मानविकी संकाय, कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय, कोटा

सारांश — **समकालीन हिंदी कहानी साहित्य भारतीय समाज की बदलती सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का एक सशक्त और यथार्थपरक दस्तावेज़ है। विशेष रूप से सांप्रदायिकता और मानवीय संवेदना के मध्य उत्पन्न द्वंद्व ने हिंदी कहानी साहित्य को नए विमर्श, नई चेतना तथा व्यापक सामाजिक दृष्टि प्रदान की है। वर्तमान समय में भारतीय समाज धार्मिक असहिष्णुता, जातीय तनाव, राजनीतिक स्वार्थ, सामाजिक विघटन, सांस्कृतिक संघर्ष और नैतिक मूल्यों के पतन जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। इन परिस्थितियों का प्रभाव सामान्य जनजीवन के साथ-साथ साहित्य पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। समकालीन हिंदी कहानियाँ समाज में व्याप्त इन विघटनकारी शक्तियों का यथार्थ चित्रण करते हुए मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रयास करती हैं।**

सांप्रदायिकता केवल धार्मिक संघर्ष का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और राजनीतिक हितों से जुड़ी एक ऐसी मानसिकता है जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है। इसके कारण समाज में भय, हिंसा, अविश्वास और विभाजन की स्थिति उत्पन्न होती है। समकालीन हिंदी कहानीकारों ने अपनी रचनाओं में सांप्रदायिक शक्तियों द्वारा उत्पन्न अमानवीय परिस्थितियों का गहन चित्रण किया है। साथ ही उन्होंने यह भी दिखाया है कि कठिन परिस्थितियों में भी मनुष्य के भीतर करुणा, प्रेम, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और भाईचारे की भावना जीवित रहती है। यही मानवीय संवेदना साहित्य का केंद्रीय तत्व बनकर उभरती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में समकालीन हिंदी कहानियों के माध्यम से सांप्रदायिकता और मानवीय संवेदना के द्वंद्व का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में भीष्म साहनी, असगर वजाहत, अब्दुल बिस्मिल्लाह तथा उदय प्रकाश जैसे प्रमुख कथाकारों की कहानियों का विशेष रूप से अध्ययन किया गया है। भीष्म साहनी की कहानियों में विभाजन और सांप्रदायिक हिंसा की त्रासदी दिखाई देती है, जबकि असगर वजाहत की रचनाएँ सांप्रदायिक मानसिकता पर तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करती हैं। अब्दुल बिस्मिल्लाह सामाजिक समरसता और मानवीय सह-अस्तित्व पर बल देते हैं तथा उदय प्रकाश आधुनिक समाज में बढ़ती संवेदनहीनता और सामाजिक विसंगतियों को उजागर करते हैं।

यह शोध-पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि समकालीन हिंदी कहानी साहित्य केवल सामाजिक यथार्थ का चित्रण नहीं करता, बल्कि समाज को मानवीय दृष्टि प्रदान करने का कार्य भी करता है। साहित्य सांप्रदायिकता जैसी विभाजनकारी प्रवृत्तियों का विरोध करते हुए मानवता, सह-अस्तित्व और संवेदना के मूल्यों को स्थापित करता है। वर्तमान समय में जब समाज में असहिष्णुता और विभाजन की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब समकालीन हिंदी कहानियाँ मानवता और सामाजिक समरसता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मुख्य शब्द — **समकालीन हिंदी कहानी, सांप्रदायिकता, मानवीय संवेदना, सामाजिक यथार्थ, सह-अस्तित्व, मानवतावाद।**

I. प्रस्तावना

हिंदी कहानी साहित्य ने आरंभ से ही समाज की वास्तविकताओं, संघर्षों और मानवीय अनुभवों को अभिव्यक्त करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है, क्योंकि उसमें समय, परिस्थितियों और मानव जीवन की विविध समस्याओं का सजीव चित्रण मिलता है। विशेष रूप से समकालीन हिंदी कहानी साहित्य ने आधुनिक भारतीय समाज में उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों को गहराई से अभिव्यक्त किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना हुई और एक नए राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई, किन्तु समय के साथ सामाजिक विघटन, धार्मिक कट्टरता, जातीय संघर्ष, राजनीतिक स्वार्थ और सांप्रदायिक तनाव जैसी समस्याएँ भी बढ़ती गईं। इन परिस्थितियों ने समाज की एकता, सहिष्णुता और मानवीय मूल्यों को गहरे स्तर पर प्रभावित किया।

समकालीन हिंदी कहानियों में सांप्रदायिकता केवल धार्मिक संघर्ष तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की मानसिकता, सामाजिक संरचना तथा राजनीतिक हितों से जुड़ी हुई व्यापक समस्या के रूप में सामने आती है। सांप्रदायिक शक्तियाँ धर्म और जाति के आधार पर समाज को विभाजित करने का कार्य करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक अविश्वास, हिंसा, भय और असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है। विभाजन की त्रासदी से लेकर आधुनिक समय के दंगों और सामाजिक तनावों तक, हिंदी कहानीकारों ने इन परिस्थितियों का अत्यंत संवेदनशील और यथार्थपरक चित्रण किया है।

दूसरी ओर, मानवीय संवेदना साहित्य का मूल तत्व है। संवेदना मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है तथा उसके भीतर सहानुभूति, करुणा, प्रेम, सहिष्णुता और भाईचारे जैसे मानवीय मूल्यों का विकास करती है। जब समाज में हिंसा, घृणा और विभाजन की प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं, तब साहित्य इन अमानवीय परिस्थितियों के विरुद्ध मानवीय चेतना को जागृत करने का कार्य करता है। समकालीन हिंदी कहानियाँ यह संदेश देती हैं कि धर्म, जाति और वर्ग से ऊपर मानवता का स्थान है।

भीष्म साहनी, असगर वजाहत, अब्दुल बिस्मिल्लाह, उदय प्रकाश आदि कथाकारों ने अपनी कहानियों में सांप्रदायिकता और मानवीय संवेदना के द्वंद्व को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में जहाँ एक ओर सांप्रदायिक शक्तियों द्वारा उत्पन्न भय, हिंसा और विघटन का चित्रण मिलता है, वहीं दूसरी ओर सामान्य मनुष्य के भीतर बची हुई करुणा, प्रेम और सह-अस्तित्व की भावना भी दिखाई देती है। यही द्वंद्व समकालीन हिंदी कहानी साहित्य को सामाजिक चेतना और मानवीय दृष्टि प्रदान करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य समकालीन हिंदी कहानियों में सांप्रदायिकता और मानवीय संवेदना के इसी संघर्ष का अध्ययन करना है। साथ ही यह स्पष्ट करना भी है कि साहित्य किस प्रकार समाज में मानवतावादी मूल्यों की स्थापना और सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

II. समकालीन हिंदी कहानी: स्वरूप और विशेषताएँ

समकालीन हिंदी कहानी हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है, जिसने समय-समय पर समाज की बदलती परिस्थितियों, मानवीय अनुभवों और सामाजिक संघर्षों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक स्तर पर व्यापक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का प्रभाव साहित्य पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। विशेष रूप से नई कहानी आंदोलन के बाद हिंदी कहानी ने पारंपरिक आदर्शवाद से हटकर यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाया। कहानीकारों ने व्यक्ति के जीवन-संघर्ष, सामाजिक विसंगतियों, मानसिक तनावों तथा मानवीय संबंधों के टूटते स्वरूप को अपनी रचनाओं का विषय बनाया।

समकालीन हिंदी कहानी का मूल आधार सामाजिक यथार्थ है। इसमें समाज के वास्तविक जीवन, समस्याओं और परिस्थितियों का चित्रण अत्यंत संवेदनशीलता और प्रामाणिकता के साथ किया गया है। कहानीकारों ने बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, जातीय विभाजन, राजनीतिक स्वार्थ तथा सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं को अपनी कहानियों में प्रमुखता से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार समकालीन कहानी समाज के उस यथार्थ को उजागर करती है, जिसे सामान्यतः लोग अनदेखा कर देते हैं।

समकालीन हिंदी कहानियों की एक प्रमुख विशेषता मानवीय संबंधों का विघटन है। आधुनिक जीवन की व्यस्तता, भौतिकवादी दृष्टिकोण और स्वार्थपरक मानसिकता के कारण पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों में दूरी बढ़ती जा रही है। कहानीकारों ने पति-पत्नी, माता-पिता और संतानों तथा मित्रों के संबंधों में उत्पन्न तनाव और अकेलेपन की भावना को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है।

इसके अतिरिक्त राजनीतिक भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता का चित्रण भी समकालीन हिंदी कहानी का महत्वपूर्ण पक्ष है। स्वतंत्रता के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित होने के बावजूद समाज में भ्रष्टाचार, सत्ता संघर्ष और धार्मिक कट्टरता जैसी समस्याएँ बढ़ीं। कहानीकारों ने इन समस्याओं के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन और मानवीय संकट को अपनी कहानियों में स्थान दिया।

समकालीन हिंदी कहानी में दलित, स्त्री और अल्पसंख्यक विमर्श की उपस्थिति भी विशेष महत्व रखती है। इस दौर की कहानियों में समाज के उपेक्षित और शोषित वर्गों की पीड़ा, संघर्ष और अधिकार चेतना को प्रमुखता से अभिव्यक्त किया गया है। स्त्री विमर्श ने महिलाओं की स्वतंत्रता, अस्मिता और सामाजिक स्थिति को केंद्र में रखा, जबकि दलित विमर्श ने सामाजिक समानता और न्याय की मांग को स्वर दिया।

इन सभी विशेषताओं के साथ समकालीन हिंदी कहानी मानवीय संवेदनाओं की पुनर्स्थापना का भी प्रयास करती है। कहानीकार यह संदेश देते हैं कि कठिन परिस्थितियों और सामाजिक विघटन के बावजूद मनुष्य के भीतर प्रेम, करुणा,

सहानुभूति और सह-अस्तित्व की भावना जीवित रहनी चाहिए। इस प्रकार समकालीन हिंदी कहानी केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, मानवीय मूल्यों और परिवर्तनकारी दृष्टि का महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है।

III. सांप्रदायिकता: अवधारणा और स्वरूप

सांप्रदायिकता एक ऐसी विचारधारा है जिसमें धर्म, जाति अथवा समुदाय को राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए प्रयोग किया जाता है। यह विचारधारा समाज में विभाजन, असहिष्णुता और वैमनस्य की भावना को बढ़ावा देती है। सांप्रदायिकता का मूल आधार यह धारणा है कि एक विशेष धर्म या समुदाय के हित अन्य समुदायों से अलग और श्रेष्ठ हैं। परिणामस्वरूप समाज में परस्पर अविश्वास, घृणा, हिंसा और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। भारत जैसे बहुधार्मिक, बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक देश में सांप्रदायिकता एक गंभीर सामाजिक और राष्ट्रीय समस्या के रूप में लंबे समय से विद्यमान रही है।

भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता उसकी सबसे बड़ी विशेषता है, किन्तु समय-समय पर राजनीतिक स्वार्थों और कट्टरपंथी शक्तियों ने धर्म का उपयोग सत्ता प्राप्ति और सामाजिक प्रभाव बढ़ाने के लिए किया। इससे समाज में धार्मिक तनाव और दंगों की स्थिति उत्पन्न हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हुआ भारत-विभाजन सांप्रदायिकता का सबसे बड़ा उदाहरण है, जिसने लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया। विभाजन की त्रासदी के बाद भी समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों में सांप्रदायिक दंगे और सामाजिक संघर्ष होते रहे हैं। इन घटनाओं ने साहित्यकारों और कहानीकारों को गहराई से प्रभावित किया।

समकालीन हिंदी कहानियों में सांप्रदायिकता विभिन्न रूपों में दिखाई देती है। धार्मिक हिंसा इसका सबसे भयावह रूप है, जहाँ धर्म के नाम पर हत्या, लूटपाट और दंगों का चित्रण मिलता है। इसके साथ ही सामाजिक अविश्वास भी सांप्रदायिकता का महत्वपूर्ण स्वरूप है। लोग एक-दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं और सामाजिक संबंध कमजोर होने लगते हैं। राजनीतिक स्वार्थ भी सांप्रदायिकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई बार राजनीतिक दल और नेता अपने हितों की पूर्ति के लिए धर्म और जाति का उपयोग करते हैं, जिससे समाज में तनाव और विभाजन बढ़ता है।

समकालीन कहानियों में अल्पसंख्यकों के भय और असुरक्षा की भावना का भी प्रभावशाली चित्रण मिलता है। सांप्रदायिक वातावरण में अल्पसंख्यक समुदाय स्वयं को असुरक्षित महसूस करता है और उसके भीतर भविष्य को लेकर भय उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त सांप्रदायिकता मानवीय संबंधों को भी प्रभावित करती है। मित्रता, पड़ोसी संबंध और पारिवारिक संबंध तक धर्म और जाति के आधार पर टूटने लगते हैं।

हिंदी कहानीकारों ने सांप्रदायिकता को केवल राजनीतिक समस्या के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे मानवीय संकट के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि सांप्रदायिकता मनुष्य के भीतर की संवेदनशीलता, प्रेम और सह-अस्तित्व की भावना को नष्ट करती है। इसलिए समकालीन हिंदी कहानियाँ सांप्रदायिकता के दुष्परिणामों को उजागर करते हुए मानवता, भाईचारे और सामाजिक समरसता का संदेश देती हैं।

IV. मानवीय संवेदना का स्वरूप

मानवीय संवेदना साहित्य की आत्मा मानी जाती है। यह वह तत्व है जो मनुष्य को केवल एक सामाजिक प्राणी नहीं, बल्कि भावनात्मक और नैतिक चेतना से संपन्न व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है। संवेदना का अर्थ केवल दूसरों के दुःख को समझना नहीं, बल्कि उनके सुख-दुःख में सहभागी बनना भी है। साहित्य में मानवीय संवेदना मनुष्य के भीतर करुणा, प्रेम, दया, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और भाईचारे जैसी भावनाओं का विकास करती है। यही संवेदनशीलता समाज को मानवीय मूल्यों से जोड़ती है और सामाजिक समरसता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

समकालीन हिंदी कहानियों में मानवीय संवेदना विशेष महत्व रखती है, क्योंकि आधुनिक समाज अनेक प्रकार के संघर्षों, तनावों और विघटनकारी प्रवृत्तियों से जूझ रहा है। भौतिकवादी जीवन शैली, राजनीतिक स्वार्थ, सांप्रदायिकता, जातीय भेदभाव और सामाजिक असमानता के कारण मनुष्य के भीतर संवेदनहीनता बढ़ती जा रही है। ऐसे समय में हिंदी कहानीकार अपनी रचनाओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रयास करते हैं। उनकी कहानियों में सामान्य मनुष्य की पीड़ा, संघर्ष, अकेलापन और भावनात्मक संकट का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है।

मानवीय संवेदना के प्रमुख तत्वों में सहानुभूति का विशेष स्थान है। सहानुभूति मनुष्य को दूसरों के दुःख और पीड़ा को समझने की क्षमता प्रदान करती है। इसी प्रकार करुणा मनुष्य के भीतर दया और उदारता की भावना उत्पन्न करती है। भाईचारा समाज में पारस्परिक प्रेम और सहयोग की

भावना को मजबूत करता है, जबकि सह-अस्तित्व विभिन्न धर्मों, जातियों और संस्कृतियों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होता है। मानवतावाद इन सभी मूल्यों का व्यापक रूप है, जो मनुष्य को धर्म, जाति और वर्ग से ऊपर उठकर केवल मानवता के आधार पर देखने की प्रेरणा देता है।

समकालीन हिंदी कहानियों में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि जब सांप्रदायिक शक्तियाँ समाज को विभाजित करने का प्रयास करती हैं, तब साहित्य मानवीय संवेदना के माध्यम से मनुष्यता को बचाने का कार्य करता है। कहानीकार यह संदेश देते हैं कि किसी भी प्रकार की हिंसा, घृणा और कट्टरता से अधिक महत्वपूर्ण मानवता और प्रेम है। विभाजन, दंगों और सामाजिक संघर्षों की पृष्ठभूमि पर लिखी गई अनेक कहानियाँ यह सिद्ध करती हैं कि कठिन परिस्थितियों में भी मनुष्य के भीतर करुणा और सह-अस्तित्व की भावना जीवित रहती है।

इस प्रकार मानवीय संवेदना समकालीन हिंदी कहानी का केंद्रीय तत्व है। यह केवल सामाजिक यथार्थ का चित्रण नहीं करती, बल्कि समाज को अधिक मानवीय, संवेदनशील और सहिष्णु बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साहित्य के माध्यम से संवेदना का यह स्वर समाज में मानवता, प्रेम और सामाजिक समरसता की स्थापना का आधार बनता है।

V. समकालीन कहानियों में सांप्रदायिकता और संवेदना का द्वंद्व

समकालीन हिंदी कहानी साहित्य में सांप्रदायिकता और मानवीय संवेदना का द्वंद्व अत्यंत महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरकर सामने आया है। आधुनिक भारतीय समाज में बढ़ती धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक स्वार्थ, सामाजिक असहिष्णुता और हिंसा ने मानवीय मूल्यों को गहराई से प्रभावित किया है। हिंदी कहानीकारों ने इन परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण करते हुए यह दिखाया है कि सांप्रदायिकता मनुष्य को विभाजित करती है, जबकि मानवीय संवेदना समाज को जोड़ने का कार्य करती है। अनेक कथाकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि कठिन परिस्थितियों में भी मानवता और करुणा की भावना समाप्त नहीं होती।

1. भीष्म साहनी की कहानियाँ

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के प्रमुख कथाकारों में से एक हैं। उनकी रचनाओं में भारत-विभाजन की त्रासदी, सांप्रदायिक हिंसा और मानवीय संकट का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। उनकी प्रसिद्ध कहानी *"अमृतसर आ गया है"* विभाजन के समय फैले भय, हिंसा और असुरक्षा की स्थिति को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती है। कहानी में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि सांप्रदायिक वातावरण में मनुष्य की पहचान केवल उसके धर्म से निर्धारित होने लगती है। लोग एक-दूसरे को संदेह और घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं तथा मानवीय संबंध टूटने लगते हैं।

किन्तु भीष्म साहनी की कहानियों का महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि हिंसा और भय के बीच भी कुछ पात्र ऐसे दिखाई देते हैं जिनके भीतर करुणा, सहानुभूति और मानवता जीवित रहती है। यही मानवीय संवेदना उनकी कहानियों को गहरा मानवीय धरातल प्रदान करती है। भीष्म साहनी यह संदेश देते हैं कि धर्म और राजनीति से ऊपर मनुष्यता का स्थान है। सांप्रदायिकता जहाँ समाज को विभाजित करती है, वहीं संवेदना मनुष्य को एक-दूसरे से जोड़ने का कार्य करती है।

2. असगर वजाहत की कहानियाँ

असगर वजाहत ने अपनी कहानियों और नाटकों में सांप्रदायिक मानसिकता पर तीखा व्यंग्य किया है। उनकी प्रसिद्ध कहानी *"सारी तालीमात"* तथा नाटक *"जिस लाहौर नहीं देख्या"* में धार्मिक कट्टरता के बीच मानवीय संबंधों की महत्ता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। लेखक यह दिखाते हैं कि सांप्रदायिकता एक कृत्रिम और राजनीतिक रूप से निर्मित मानसिकता है, जबकि मानवता मनुष्य का स्वाभाविक गुण है।

उनकी रचनाओं में सामान्य मनुष्य सांप्रदायिक राजनीति का शिकार बनता है। धार्मिक और राजनीतिक शक्तियाँ समाज को बाँटने का प्रयास करती हैं, किन्तु आम लोगों के भीतर प्रेम, सहयोग और सह-अस्तित्व की भावना बनी रहती है। असगर वजाहत यह स्पष्ट करते हैं कि सांस्कृतिक साझेदारी और मानवीय संबंध किसी भी प्रकार की सांप्रदायिकता से अधिक मजबूत होते हैं।

3. अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियाँ

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियाँ भारतीय मुस्लिम समाज और उसकी सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं को केंद्र में रखती हैं। उनकी रचनाओं में सांप्रदायिक तनाव के बीच साधारण मनुष्य की पीड़ा, भय और संघर्ष का अत्यंत संवेदनशील चित्रण मिलता है। वे यह दर्शाते हैं कि सांप्रदायिकता का सबसे अधिक प्रभाव आम जनता पर

पड़ता है, जो हिंसा और राजनीतिक स्वार्थों के बीच पीड़ित होती है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह सामाजिक समरसता और मानवीय सह-अस्तित्व पर विशेष बल देते हैं। उनकी कहानियाँ यह संदेश देती हैं कि विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच प्रेम, भाईचारा और सहयोग की भावना ही समाज को मजबूत बना सकती है। उनका मानना है कि साहित्य का उद्देश्य केवल यथार्थ का चित्रण करना नहीं, बल्कि समाज में मानवीय मूल्यों, प्रेम और सद्भाव की स्थापना करना भी है।

4. उदय प्रकाश की कहानियाँ

उदय प्रकाश की कहानियाँ समकालीन सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक भ्रष्टाचार और मानवीय संकटों का यथार्थ चित्रण करती हैं। उनकी रचनाओं में सत्ता, राजनीति और सामाजिक अन्याय के कारण उत्पन्न अमानवीय परिस्थितियाँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं। वे यह दर्शाते हैं कि आधुनिक समाज में भौतिकवाद और स्वार्थ की प्रवृत्ति के कारण मनुष्य धीरे-धीरे संवेदनहीन होता जा रहा है।

इसके बावजूद उदय प्रकाश की कहानियों में मानवीय करुणा और प्रतिरोध की चेतना बनी रहती है। उनके पात्र अन्याय और अमानवीयता के विरुद्ध संघर्ष करते दिखाई देते हैं। वे यह संदेश देते हैं कि कठिन परिस्थितियों में भी मनुष्य के भीतर संवेदना और मानवता को जीवित रखा जा सकता है। इस प्रकार उनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ के साथ-साथ मानवीय चेतना और प्रतिरोध की भावना को भी अभिव्यक्त करती हैं।

इस प्रकार समकालीन हिंदी कहानियों में सांप्रदायिकता और मानवीय संवेदना का द्वंद्व समाज की वास्तविक परिस्थितियों को उजागर करता है। हिंदी कहानीकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि सांप्रदायिकता चाहे जितनी प्रबल हो, अंततः मानवता, करुणा और सह-अस्तित्व की भावना ही समाज को बचाने में सक्षम होती है।

VI. सांप्रदायिकता के कारण उत्पन्न सामाजिक संकट

समकालीन हिंदी कहानियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि सांप्रदायिकता केवल धार्मिक विवाद या मतभेद की समस्या नहीं है, बल्कि यह एक गहरा सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय संकट है। सांप्रदायिकता समाज की एकता, शांति और सह-अस्तित्व की भावना को कमजोर करती है तथा मनुष्य के भीतर घृणा, भय और असुरक्षा की मानसिकता उत्पन्न करती है। हिंदी कहानीकारों ने अपनी रचनाओं में यह दिखाया है कि जब धर्म और जाति को राजनीतिक स्वार्थों के लिए प्रयोग किया जाता है, तब उसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव सामान्य जनता पर पड़ता है।

सांप्रदायिकता के कारण समाज में सबसे पहले सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है। विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच अविश्वास बढ़ने लगता है, जिससे सामाजिक एकता कमजोर हो जाती है। जो लोग पहले मिल-जुलकर रहते थे, वे धीरे-धीरे एक-दूसरे से दूर होने लगते हैं। समकालीन हिंदी कहानियों में यह चित्रण बार-बार दिखाई देता है कि सांप्रदायिक तनाव के कारण पड़ोसी, मित्र और परिचित तक एक-दूसरे के विरोधी बन जाते हैं। इससे समाज में विभाजन और अलगाव की भावना बढ़ती है।

सांप्रदायिकता का दूसरा बड़ा प्रभाव मानवीय संबंधों के टूटने के रूप में दिखाई देता है। धर्म और जाति के आधार पर उत्पन्न कट्टरता मनुष्य को संवेदनहीन बना देती है। पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों में दरारें आने लगती हैं। कई कहानियों में यह दर्शाया गया है कि सांप्रदायिक दंगों के दौरान वर्षों पुराने संबंध भी समाप्त हो जाते हैं और मनुष्य केवल धार्मिक पहचान तक सीमित होकर रह जाता है।

इसके अतिरिक्त सांप्रदायिकता हिंसा और भय का वातावरण उत्पन्न करती है। दंगे, हत्या, लूटपाट और आगजनी जैसी घटनाएँ समाज में असुरक्षा की भावना को जन्म देती हैं। विशेष रूप से अल्पसंख्यक समुदायों के भीतर भय और असहायता की स्थिति उत्पन्न होती है। समकालीन हिंदी कहानीकारों ने विभाजन, दंगों और सामाजिक संघर्षों के माध्यम से इस भयावह स्थिति का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है।

सांप्रदायिकता लोकतांत्रिक मूल्यों के ह्रास का भी कारण बनती है। लोकतंत्र समानता, स्वतंत्रता, सहिष्णुता और भाईचारे के सिद्धांतों पर आधारित होता है, किन्तु सांप्रदायिक राजनीति इन मूल्यों को कमजोर करती है। जब धर्म के आधार पर राजनीति की जाती है, तब सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता प्रभावित होती है। इससे समाज में असहिष्णुता और कट्टरता बढ़ती है तथा लोग एक-दूसरे के विचारों और विश्वासों का सम्मान करना छोड़ देते हैं।

समकालीन हिंदी कहानीकार इन समस्याओं को उजागर करते हुए समाज को चेतावनी देते हैं कि यदि मानवीय संवेदनाएँ समाप्त हो गईं, तो समाज का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा। उनकी कहानियाँ यह संदेश देती हैं कि सांप्रदायिकता का समाधान केवल मानवता, सह-अस्तित्व, प्रेम और सामाजिक समरसता के माध्यम से ही संभव है।

साहित्यकार अपने लेखन के माध्यम से समाज को अधिक संवेदनशील, सहिष्णु और मानवीय बनाने का प्रयास करते हैं, ताकि सामाजिक संकटों से बचा जा सके।

VII. साहित्य की भूमिका

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, क्योंकि वह समाज की वास्तविक परिस्थितियों, समस्याओं और मानवीय अनुभवों को अभिव्यक्त करता है। किन्तु साहित्य केवल समाज का प्रतिबिंब प्रस्तुत करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह समाज का मार्गदर्शन भी करता है। साहित्य मनुष्य के विचारों, भावनाओं और दृष्टिकोण को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। विशेष रूप से समकालीन हिंदी कहानी साहित्य ने सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समस्याओं को उजागर करते हुए समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

समकालीन हिंदी कहानियाँ समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता, हिंसा और सामाजिक विघटन का विरोध करती हैं। कहानीकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि सांप्रदायिकता केवल सामाजिक विभाजन ही नहीं उत्पन्न करती, बल्कि मनुष्य के भीतर की संवेदनशीलता और मानवता को भी नष्ट करती है। इसलिए साहित्य का दायित्व केवल समस्याओं को चित्रित करना नहीं, बल्कि उनके समाधान की दिशा में मानवीय चेतना को जागृत करना भी है।

साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका सामाजिक चेतना उत्पन्न करना है। समकालीन हिंदी कहानियाँ समाज में व्याप्त अन्याय, भेदभाव, हिंसा और असमानता को सामने लाकर पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। कहानीकार अपने पात्रों और घटनाओं के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि सांप्रदायिकता समाज और राष्ट्र दोनों के लिए घातक है। इस प्रकार साहित्य समाज को जागरूक और संवेदनशील बनाने का कार्य करता है।

साहित्य सांप्रदायिक शक्तियों का विरोध करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिंदी कहानीकारों ने अपनी कहानियों में उन राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों की आलोचना की है जो धर्म और जाति के आधार पर समाज को बाँटने का प्रयास करती हैं। वे यह संदेश देते हैं कि धर्म का उद्देश्य मनुष्य को जोड़ना है, न कि विभाजित करना। साहित्य के माध्यम से लेखक मानवता और सह-अस्तित्व की भावना को मजबूत करने का प्रयास करते हैं।

इसके अतिरिक्त साहित्य मानवतावादी दृष्टिकोण विकसित करने में भी सहायक होता है। समकालीन हिंदी कहानियाँ मनुष्य को धर्म, जाति और वर्ग से ऊपर उठकर केवल एक मानव के रूप में देखने की प्रेरणा देती हैं। इन कहानियों में करुणा, प्रेम, सहानुभूति और भाईचारे जैसी मानवीय भावनाओं को विशेष महत्व दिया गया है। यही भावनाएँ समाज में सहिष्णुता और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देती हैं।

साहित्य सहिष्णुता और भाईचारे का प्रचार करके विभिन्न समुदायों के बीच आपसी समझ और सहयोग की भावना विकसित करता है। जब समाज में हिंसा और घृणा का वातावरण बनता है, तब साहित्य मनुष्य को प्रेम, शांति और संवाद का मार्ग दिखाता है। हिंदी कहानीकारों ने अपनी रचनाओं में यह स्पष्ट किया है कि समाज की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता और सांस्कृतिक एकता में निहित है।

समकालीन कहानीकार यह विश्वास व्यक्त करते हैं कि साहित्य मनुष्य को अधिक संवेदनशील, सहिष्णु और मानवीय बना सकता है। साहित्य मनुष्य के भीतर मानवीय मूल्यों को जागृत कर उसे समाज और मानवता के प्रति उत्तरदायी बनाता है। इस प्रकार साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, नैतिक चेतना और मानवीय समरसता का सशक्त साधन है।

VIII. निष्कर्ष

समकालीन हिंदी कहानियों में सांप्रदायिकता और मानवीय संवेदना का द्वंद्व भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों और जटिलताओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करता है। आधुनिक भारतीय समाज में धार्मिक कट्टरता, सामाजिक असहिष्णुता, राजनीतिक स्वार्थ और सांप्रदायिक तनाव जैसी समस्याएँ लगातार बढ़ती रही हैं। इन परिस्थितियों ने सामाजिक एकता, भाईचारे और मानवीय मूल्यों को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। समकालीन हिंदी कहानीकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इन समस्याओं का यथार्थ चित्रण करते हुए समाज को चेतावनी देने का कार्य किया है।

सांप्रदायिकता जहाँ मनुष्य को धर्म, जाति और समुदाय के आधार पर विभाजित करती है, वहीं मानवीय संवेदना मनुष्य को जोड़ने का कार्य करती है। हिंदी कहानी साहित्य यह स्पष्ट करता है कि किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसकी मानवता, सह-अस्तित्व और सामाजिक समरसता में निहित होती है। जब समाज में घृणा, हिंसा और विभाजन की

प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं, तब साहित्य मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का माध्यम बनता है। समकालीन कहानियाँ यह संदेश देती हैं कि मनुष्य की पहचान उसके धर्म या जाति से नहीं, बल्कि उसकी संवेदनशीलता और मानवता से होती है। भीष्म साहनी, असगर वजाहत, अब्दुल बिस्मिल्लाह और उदय प्रकाश जैसे प्रमुख कथाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सांप्रदायिकता के दुष्परिणामों को अत्यंत मार्मिक और यथार्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। भीष्म साहनी ने विभाजन और दंगों की त्रासदी के बीच मानवीय करुणा को चित्रित किया, जबकि असगर वजाहत ने सांप्रदायिक मानसिकता पर व्यंग्य करते हुए मानवता की श्रेष्ठता को स्थापित किया। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने सामाजिक समरसता और सह-अस्तित्व की भावना को महत्व दिया तथा उदय प्रकाश ने आधुनिक समाज में बढ़ती संवेदनहीनता और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध मानवीय चेतना को स्वर प्रदान किया। इन सभी कथाकारों की रचनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि मनुष्यता किसी भी धर्म, जाति या राजनीति से कहीं अधिक बड़ी और महत्वपूर्ण है।

समकालीन हिंदी कहानियाँ केवल सामाजिक यथार्थ का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि समाज को नैतिक और मानवीय दिशा भी प्रदान करती हैं। साहित्य समाज में संवेदनशीलता, सहिष्णुता, प्रेम और भाईचारे की भावना को विकसित करता है। यह मनुष्य को अन्याय, हिंसा और विभाजनकारी शक्तियों के विरुद्ध सोचने और संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।

आज के समय में जब विश्व स्तर पर धार्मिक कट्टरता, असहिष्णुता और सामाजिक विभाजन की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब साहित्य की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। समकालीन हिंदी कहानियाँ हमें यह संदेश देती हैं कि मानवता, सह-अस्तित्व, करुणा और संवेदना ही समाज को सुरक्षित, शांतिपूर्ण और समृद्ध बना सकती हैं। यदि मानवीय संवेदनाएँ समाप्त हो जाएँ, तो समाज का अस्तित्व भी संकट में पड़ सकता है। इसलिए साहित्य का दायित्व केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं, बल्कि मानवता और सामाजिक समरसता की रक्षा करना भी है।

संदर्भ सूची

[1] साहनी, भीष्म। अमृतसर आ गया है। राजकमल प्रकाशन, 2007।

[2] वजाहत, असगर। जिस लाहौर नहीं देख्या ओ जम्याइ नईं। वाणी प्रकाशन, 2011।

[3] बिस्मिल्लाह, अब्दुल। झीनी-झीनी बीनी चदरिया। राजकमल प्रकाशन, 2009।

[4] प्रकाश, उदय। तिरिछ। वाणी प्रकाशन, 2015।

[5] सिंह, नामवर। कहानी : नई कहानी। लोकभारती प्रकाशन, 2006।

[6] शर्मा, रामविलास। हिंदी साहित्य और समाज। राजकमल प्रकाशन, 2001।

[7] यादव, राजेंद्र। कहानी : स्वरूप और संवेदना। वाणी प्रकाशन, 2003।

[8] वर्मा, निर्मल। कला का जोखिम। राजकमल प्रकाशन, 2005।

[9] पचौरी, सुधीश। समकालीन हिंदी साहित्य : विमर्श और दृष्टि। किताबघर प्रकाशन, 2012।

[10] चतुर्वेदी, जगदीश्वर। समकालीन हिंदी साहित्य के विविध आयाम। अनामिका प्रकाशन, 2014।

[11] द्विवेदी, हजारीप्रसाद। साहित्य का मर्म। राजकमल प्रकाशन, 2008।

[12] मिश्र, शिवकुमार। हिंदी कहानी का विकास। लोकभारती प्रकाशन, 2010।

[13] कुमार, विजय। समकालीन हिंदी कहानी और सामाजिक यथार्थ। वाणी प्रकाशन, 2016।

[14] राय, गोपाल। हिंदी कहानी का इतिहास। राजकमल प्रकाशन, 2002।

[15] विभिन्न शोध आलेख। समकालीन हिंदी साहित्य और सांप्रदायिक विमर्श। विभिन्न शोध पत्रिकाएँ एवं जर्नल, 2015-2025।